International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-0558 Impact Factor: 7.119
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

झारखंड में महिला सशक्तिकरण: ऐतिहासिक अध्ययन

दीपा गोस्वामी

शोधार्थी, इतिहास विभाग, आईसेक्ट विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड

सार

झारखंड में महिला सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण और संवेदनशील विषय है, जो राज्य के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए केंद्रीय है। इस राज्य में महिलाएँ ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाओं का सामना करती हैं, जिससे उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के क्षेत्रों में समान अवसर नहीं मिल पाते हैं। विभिन्न सरकारी योजनाएँ, जैसे "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ," "महिला हेल्पलाइन," और "उज्ज्वला योजना," महिला अधिकारों और स्वतंत्रता को बढ़ावा देने का कार्य कर रही हैं। हालांकि, कन्या भ्रूण हत्या, बाल विवाह और कार्यस्थलों पर लैंगिक भेदभाव जैसी समस्याएँ अभी भी मौजूद हैं। इन समस्याओं का समाधान करने के लिए समाज, सरकार और स्वयं महिलाओं को मिलकर काम करना होगा। राज्य में महिला सशक्तिकरण की दिशा में आवश्यक सुधार शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, रोजगार अवसरों और सामाजिक जागरूकता में किए जाने चाहिए। महिलाएँ जब सशक्त होंगी, तभी राज्य का समग्र विकास संभव होगा।

कीवर्ड: *महिला सशक्तिकरण, झारखंड, सामाजिक विकास, आर्थिक विकास, शिक्षा.*

1 परिचय

झारखंड में महिला सशक्तिकरण एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है, जो राज्य के सामाजिक और आर्थिक विकास में अहम भूमिका निभाता है [1]। राज्य में महिलाएँ ऐतिहासिक और सामाजिक बाधाओं का सामना कर रही हैं, जिसके कारण उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य, और रोजगार के क्षेत्र में बराबरी का अवसर नहीं मिल पाता। झारखंड में महिला सशक्तिकरण की दिशा में कई सरकारी योजनाएँ और कार्यक्रम लागू किए गए हैं, जैसे "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ," "महिला हेल्पलाइन," और "उज्ज्वला योजना," जो महिलाओं के अधिकारों और स्वतंत्रता को बढ़ावा देने का कार्य कर रहे हैं। हालांकि, कन्या भ्रूण हत्या, बाल विवाह, और कार्यस्थलों पर लैंगिक भेदभाव जैसी समस्याएँ अब भी मौजूद हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए समाज, सरकार, और स्वयं महिलाओं को मिलकर काम करना होगा। राज्य में महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, रोजगार अवसरों, और सामाजिक जागरूकता में सुधार करना अत्यंत आवश्यक है [2]। महिलाएँ यदि सशक्त होंगी, तो राज्य का समग्र विकास संभव है।

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-0558 Impact Factor: 7.119
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

2. साहित्य समीक्षा

झारखंड में महिला सशक्तिकरण एक महत्वपूर्ण और संवेदनशील मुद्दा है, जो समाज में महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति को सुधारने की दिशा में उठाए गए कदमों को दर्शाता है। राज्य में महिलाओं को समान अधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएँ, और रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए कई सरकारी योजनाएँ और कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। हालांकि, इन प्रयासों के बावजूद सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक चुनौतियाँ महिलाओं के सशक्तिकरण में बाधा डालती हैं, जिन्हें दूर करना आवश्यक है।

साहित्य समीक्षा का सारांश

लेखक	कार्य का विवरण	निष्कर्ष
कुमार, A. (2018)	अध्ययन में झारखंड में महिला सशक्तिकरण और सामाजिक न्याय की चुनौतियों और नीति परिप्रेक्ष्य की चर्चा की गई।	महिला सशक्तिकरण के लिए नीति की प्रभावशीलता को बढ़ाने की आवश्यकता है, विशेष रूप से सामाजिक न्याय को प्राथमिकता देते हुए।
कुमारी, R. (2018)	झारखंड में महिला सशक्तिकरण में सूक्ष्म वित्त के योगदान का विश्लेषण किया।	सूक्ष्म वित्त ने महिलाओं को स्वावलंबी बनाने में मदद की है, लेकिन वित्तीय साक्षरता में सुधार की आवश्यकता है।
प्रसाद, N. (2018)	लिंग समानता और महिला सशक्तिकरण पर आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया।	लिंग समानता के लिए ठोस नीतियां और सामाजिक दृष्टिकोण में बदलाव की आवश्यकता है।
मेहता, A. (2018)	झारखंड में सामाजिक मान्यताओं और महिला सशक्तिकरण पर अध्ययन किया।	सामाजिक मान्यताएँ और पारंपरिक धारणाएं महिला सशक्तिकरण में बाधक हैं, इन पर काम करने की आवश्यकता है।
देवी, S. (2018)	महिला शिक्षा और सशक्तिकरण के बीच संबंधों का विश्लेषण किया।	शिक्षा महिला सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में।
ठाकुर, K. (2018)	झारखंड में ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए सरकारी योजनाओं का मूल्यांकन किया।	सरकारी योजनाओं का प्रभाव सीमित है; ग्रामीण महिलाओं के लिए विशेष योजनाओं की जरूरत है।

देव, S. (2012)	झारखंड में महिला सशक्तिकरण में आने वाली रुकावटों और समाधान की चर्चा की।	महिला सशक्तिकरण में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रुकावटों का सामना करना पड़ता है।
कुमार, R. (2012)	महिला सशक्तिकरण और कृषि क्षेत्र में उनकी भूमिका पर विश्लेषण किया।	कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने से उनकी सशक्तिकरण में सुधार हो सकता है।
वर्मा, S. (2012)	महिला कार्यबल की भागीदारी और सशक्तिकरण के पहलुओं का अध्ययन किया।	कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने से उनका सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण संभव है।
शर्मा, M. (2012)	महिला सशक्तिकरण के लिए राजनीतिक भागीदारी के प्रभाव पर अध्ययन किया।	राजनीतिक भागीदारी महिला सशक्तिकरण में निर्णायक भूमिका निभाती है, लेकिन इसमें सुधार की आवश्यकता है।
कुमार, V. (2012)	महिला सशक्तिकरण और कृषि विकास में उनकी भूमिका पर अध्ययन किया।	कृषि विकास में महिलाओं की भूमिका को बढ़ाकर सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया जा सकता है।

3. कार्यप्रणाली

इस शोध में महिला सशक्तिकरण के महत्व और झारखंड में इसके कार्यान्वयन पर ध्यान केंद्रित किया गया है। महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक दृष्टिकोण से आत्मनिर्भर और स्वतंत्र बनाना है। झारखंड में महिलाएँ आर्थिक रूप से पिछड़ी, अशिक्षित और सामाजिक प्रतिबंधों से जूझ रही हैं, जिनके कारण उनका विकास बाधित होता है। हालांकि, सरकार ने शिक्षा, स्वास्थ्य, और रोजगार के क्षेत्र में कई योजनाएँ शुरू की हैं, जैसे महिला स्वयं सहायता समूह और कौशल विकास कार्यक्रम। फिर भी, पारंपरिक कुरीतियाँ और लैंगिक भेदभाव जैसी समस्याएँ बनी हुई हैं। यह शोध यह समझने का प्रयास करता है कि झारखंड में महिला सशक्तिकरण को प्रभावी बनाने के लिए सामाजिक, सरकारी और व्यक्तिगत प्रयासों की आवश्यकता है।

4. परिणाम एवं चर्चा

भारत में महिला सशक्तिकरण के मार्ग में आने वाली बाधाएं: झारखंड के संदर्भ में

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-0558 Impact Factor: 7.119
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भारत जैसे विविधतापूर्ण समाज में, परंपराएं और सामाजिक रिवाज महिलाओं के सशक्तिकरण में कई बार बाधा बनते हैं। झारखंड जैसे राज्य, जहां ग्रामीण परिवेश और आदिवासी संस्कृति का गहरा प्रभाव है, वहां महिला सशक्तिकरण की चुनौतियां और भी अधिक जटिल हो जाती हैं। झारखंड में महिलाओं के सशक्तिकरण के मार्ग में आने वाली प्रमुख बाधाएं निम्नलिखित हैं:

1. सामाजिक परंपराएं और रूढ़िवाद

झारखंड में पारंपरिक आदिवासी और ग्रामीण समाज में महिलाओं की भूमिकाएं अक्सर घर और खेती तक सीमित मानी जाती हैं [7]। शिक्षा या रोजगार के लिए घर से बाहर जाने की आज़ादी में कमी होती है। इस प्रकार की सामाजिक बाधाएं महिलाओं को आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनने से रोकती हैं।

2. कार्यस्थलों पर शारीरिक शोषण: **झारखंड जैसे राज्य में, जहां महिलाएं मुख्य रूप से असंगठित क्षेत्रों में कार्य करती हैं, कार्यस्थलों पर शोषण एक गंभीर समस्या है। निर्माण कार्य, कृषि और अन्य क्षेत्रों में महिलाओं का शोषण अधिक देखा जाता है। इसके अलावा, जागरूकता की कमी और कानूनी सुरक्षा उपायों का अभाव इस समस्या को और बढ़ाता है।**

3. लैंगिक भेदभाव: झारखंड के ग्रामीण और आदिवासी इलाकों में महिलाओं के प्रति लैंगिक भेदभाव गहराई से व्याप्त है [8]। शिक्षा, स्वास्थ्य, और आर्थिक अवसरों में पुरुषों की तुलना में महिलाओं को हमेशा पीछे रखा जाता है। महिलाएं पारिवारिक निर्णयों में भी स्वतंत्र नहीं होतीं, जिससे उनका सामाजिक और आर्थिक विकास बाधित होता है।

4. भुगतान में असमानता: झारखंड के असंगठित श्रम क्षेत्र में महिलाओं को समान कार्य के लिए पुरुषों से कम भुगतान किया जाता है। खासतौर से दिहाड़ी मजदूरी वाले कार्यों में यह असमानता स्पष्ट रूप से देखी जाती है। यह असमानता महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता को सीमित करती है।

5. अशिक्षा: झारखंड में महिला साक्षरता दर राष्ट्रीय औसत से कम है। ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों को शिक्षा की सुविधा तो मिलती है, लेकिन सामाजिक और आर्थिक बाधाओं के चलते उनकी शिक्षा

अक्सर बीच में ही छूट जाती है। अशिक्षा महिलाओं को जागरूकता और अधिकारों से वंचित रखती है।

6. बाल विवाह: झारखंड के ग्रामीण इलाकों में बाल विवाह अब भी एक गंभीर समस्या है। शिक्षा और जागरूकता की कमी के कारण कम उम्र में लड़कियों की शादी कर दी जाती है, जिससे उनका शारीरिक और मानसिक विकास प्रभावित होता है [9]।

7. महिलाओं के विरुद्ध अपराध: झारखंड में महिलाओं के खिलाफ घरेलू हिंसा, दहेज प्रथा, ऑनर किलिंग और मानव तस्करी जैसी घटनाएं अक्सर सामने आती हैं। यहां तक कि कामकाजी महिलाएं भी सुरक्षा के डर से स्वतंत्र रूप से कहीं आने-जाने में हिचकिचाती हैं।

8. **कन्या भ्रूण हत्या:** झारखंड में महिला सशक्तिकरण के मार्ग में आने वाली प्रमुख बाधाओं में से एक कन्या भ्रूण हत्या है। यह कुप्रथा लिंग के आधार पर भ्रूण को समाप्त करने से संबंधित है, जहां कन्या भ्रूण का पता चलते ही अक्सर बिना माँ की सहमति के गर्भपात करा दिया जाता है। यह समस्या झारखंड सहित भारत के अन्य राज्यों में भी व्याप्त है और इसके परिणामस्वरूप हरियाणा और जम्मू-कश्मीर जैसे राज्यों में स्त्री-पुरुष लिंगानुपात में बड़ा अंतर देखा गया है [10]। झारखंड में महिला सशक्तिकरण के प्रयास तब तक अधूरे रहेंगे, जब तक इस समस्या का समाधान नहीं किया जाता। कन्या भ्रूण हत्या न केवल महिलाओं के अस्तित्व को खतरे में डालती है, बल्कि समाज में महिलाओं के प्रति गहरी असमानता और भेदभाव को भी बढ़ावा देती है। इस समस्या के समाधान के लिए सख्त कानून, जनजागरूकता, और सामाजिक मानसिकता में बदलाव की आवश्यकता है। जब तक झारखंड में इस कुप्रथा को पूरी तरह समाप्त नहीं किया जाता, तब तक महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य को पूरी तरह प्राप्त करना संभव नहीं होगा।

झारखंड में महिला सशक्तिकरण के लिए सरकार की भूमिका: भारत सरकार ने महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं, जिनका उद्देश्य महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, और अन्य क्षेत्रों में प्रोत्साहन देना है। झारखंड में भी इन योजनाओं का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित किया जा रहा है ताकि समाज में महिलाओं की भागीदारी बढ़े और उनकी स्थिति सुदृढ़ हो। इन योजनाओं का गठन महिलाओं की स्थानीय परिस्थितियों और आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया गया है [11]।

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-0558 Impact Factor: 7.119
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रमुख योजनाएं और उनका झारखंड में योगदान

1. **बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना:** यह योजना झारखंड में कन्या भ्रूण हत्या को रोकने और लड़कियों की शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए लागू की गई है। इसके तहत जागरूकता अभियानों और आर्थिक सहायता के माध्यम से लोगों की सोच में बदलाव लाने का प्रयास किया जा रहा है।
2. **महिला हेल्पलाइन योजना:** झारखंड में महिलाओं को 24 घंटे आपातकालीन सहायता प्रदान करने के लिए इस योजना को लागू किया गया है। महिलाएं 181 हेल्पलाइन नंबर पर हिंसा या अपराध की शिकायत दर्ज करा सकती हैं। यह सेवा महिलाओं को त्वरित न्याय और सुरक्षा प्रदान करने में सहायक है [12]।
3. **उज्जवला योजना:** झारखंड में महिलाओं को यौन शोषण से बचाने और उनके पुनर्वास और कल्याण के लिए यह योजना प्रभावी रूप से कार्य कर रही है। इस योजना का उद्देश्य पीड़ित महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना है।
4. **महिला शक्ति केंद्र:** ग्रामीण झारखंड में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए यह योजना सामुदायिक भागीदारी पर आधारित है। इसके तहत छात्रों और पेशेवरों की मदद से महिलाओं को उनके अधिकारों और सरकारी कल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी दी जाती है।
5. **स्टेप योजना:** झारखंड में महिलाओं को कृषि, बागवानी, सिलाई, मछली पालन, और हथकरघा जैसे क्षेत्रों में कौशल प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए यह योजना चलाई जा रही है [13]। यह योजना महिलाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराकर उनके आर्थिक स्वावलंबन को बढ़ावा देती है।

महिला सशक्तिकरण के मुख्य उद्देश्य

1. **प्रतिभाशाली महिलाओं का विकास:** झारखंड में कई महिलाएं अपनी प्रतिभा के बावजूद उचित मार्गदर्शन और संसाधनों के अभाव में अपनी क्षमताओं का उपयोग नहीं कर पाती हैं। महिला सशक्तिकरण के माध्यम से उनकी क्षमताओं को विकसित कर उन्हें देश के विकास में योगदान देने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।
2. **समाज में समानता प्राप्त करना:** महिला सशक्तिकरण का मुख्य लक्ष्य झारखंड में महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार और स्वतंत्रता प्रदान करना है [14]। इसके माध्यम से महिलाओं

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-0558 Impact Factor: 7.119
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

को अपनी राय स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने और समाज में समानता का अनुभव करने का अवसर दिया जा रहा है।

5. निष्कर्ष

महिला सशक्तिकरण केवल महिलाओं को उनके अधिकार और स्वतंत्रता प्रदान करने का विषय नहीं है, बल्कि यह समग्र सामाजिक और आर्थिक विकास की कुंजी है। झारखंड में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता विशेष रूप से महसूस की जाती है, क्योंकि यहाँ की महिलाएँ ऐतिहासिक और सामाजिक बाधाओं के चलते अभी भी पिछड़ेपन का सामना कर रही हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, और आर्थिक स्वावलंबन के क्षेत्र में किए गए सरकारी प्रयासों ने स्थिति को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। झारखंड जैसे राज्य में, जहां सामाजिक और सांस्कृतिक परंपराएँ गहरी जड़ें जमाए हुए हैं, महिला सशक्तिकरण के मार्ग में चुनौतियाँ अधिक जटिल हैं। कन्या भ्रूण हत्या, बाल विवाह, अशिक्षा, और कार्यस्थलों पर लैंगिक भेदभाव जैसी समस्याएँ अभी भी मौजूद हैं, जो महिलाओं की उन्नति में बाधा बनती हैं। हालाँकि, "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ," "महिला हेल्पलाइन," "उज्ज्वला योजना," और "महिला शक्ति केंद्र" जैसी सरकारी योजनाएँ महिला सशक्तिकरण को गति देने में सहायक सिद्ध हुई हैं। महिला सशक्तिकरण के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है, जिसमें सरकार, समाज, और स्वयं महिलाओं की सक्रिय भागीदारी हो। झारखंड की आधी आबादी को आत्मनिर्भर और सशक्त बनाने के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर करना, रोजगार के अवसर बढ़ाना, और लैंगिक भेदभाव को समाप्त करना अत्यावश्यक है।अंततः, झारखंड में महिला सशक्तिकरण न केवल सामाजिक न्याय की दिशा में एक कदम होगा, बल्कि यह राज्य के समग्र विकास और प्रगति का मार्ग भी प्रशस्त करेगा। महिलाओं की समान भागीदारी के बिना, झारखंड का संपूर्ण विकास असंभव है। इस दिशा में निरंतर प्रयास और जनजागरूकता ही सशक्त झारखंड और सशक्त भारत की नींव रख सकते हैं।

भविष्य का दायरा

- महिलाओं के लिए विशेष शिक्षा योजनाएँ और डिजिटल कौशल प्रशिक्षण।
- मातृ-शिशु स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार और महिला हेल्पलाइन मजबूत करना।
- महिला उद्यमिता को बढ़ावा और स्वरोजगार के लिए वित्तीय सहायता।
- कार्यस्थलों पर समानता और सांस्कृतिक बाधाओं के समाधान।
- सख्त कानून और जागरूकता अभियान।

International Journal of Management, IT & Engineering
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-0558 Impact Factor: 7.119
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

9. संदर्भ

1. कुमार, A. (2018). झारखंड में महिला सशक्तिकरण और सामाजिक न्याय: चुनौतियाँ और नीति परिप्रेक्ष्य.
2. कुमारी, R. (2018). झारखंड में महिला सशक्तिकरण में सूक्ष्म वित्त का योगदान: एक केस अध्ययन.
3. झा, S., & प्रसाद, N. (2018). झारखंड में लिंग समानता और महिला सशक्तिकरण: एक आलोचनात्मक विश्लेषण.
4. चौधरी, S., & मेहता, A. (2018). सामाजिक मान्यताएँ और महिला सशक्तिकरण: झारखंड का अध्ययन.
5. राम, R., & देवी, S. (2018). झारखंड में महिला शिक्षा और सशक्तिकरण के बीच संबंध.
6. सिंह, P., & ठाकुर, K. (2018). झारखंड में ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए सरकारी योजनाएं.
7. देव, S. (2012). झारखंड में महिला सशक्तिकरण की दिशा में रुकावटें और समाधान.
8. तिवारी, N., & कुमार, R. (2012). झारखंड में महिला सशक्तिकरण और कृषि क्षेत्र में भूमिका.
9. वर्मा, S. (2012). झारखंड में महिला कार्यबल की भागीदारी और सशक्तिकरण के पहलू.
10. शर्मा, M. (2012). झारखंड में महिला सशक्तिकरण के लिए राजनीतिक भागीदारी का प्रभाव.
11. कुमार, V. (2012). झारखंड में महिला सशक्तिकरण और कृषि विकास की भूमिका.
12. मिश्रा, S., & कुमार, R. (2012). झारखंड में महिला स्वास्थ्य और सशक्तिकरण: एक सर्वेक्षण.
13. सिंह, A., & यादव, R. (2012). झारखंड में महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा की भूमिका.
14. कुमारी, N. (2012). झारखंड में महिला सशक्तिकरण और सामाजिक उत्थान के उपाय.